अध्याय

02

ल्हासा की ओर

राहुल सांकृत्यायन

विधा–यात्रा वृतांत

लेखक– राहुल सांकृत्यायन

लेखक परिचय:

मूल नाम– केदारनाथ पांडे

उपनाम –राहुल सांकृत्यायन (बौद्ध धर्म अपनाने के बाद)

जन्म– 9 अप्रैल 1893

राज्य उत्तर प्रदेश

जिला आजमगढ़।

गांव –पंदाह

पिता गोवर्धन पांडे

माता कुलवंती देवी

उपाधि–महा पंडित (काशी के विद्वानों द्वारा दिया गाया)

काल–आधुनिक काल (द्विवेदी युग)

पहचान–यात्राकार इतिहासविद, युगपरिवर्तन साहित्यकार।

राहुल सांकृत्यायन : साहित्यिक परिचय

विशाल कद के लेखक का साहित्यिक परिचय प्राप्त करने के पहले उनके व्यक्तित्व को जानने की चेष्टा करना आवश्यक है। किसी भी रचनाकार की रचना उसके व्यक्तित्व को समेटे हुए रहता है उनका व्यक्तित्व रुचि आदि से उनकी रचनाएं संपृक्त (जुड़ी) रहती है।

अगर हम बात करें राहुल सांकृत्यायन की तो हम ऐसे लेखक के बारे में बात कर रहे हैं जो द्विवेदी कालीन युग में जिन्होंने यात्रा वृतांत के द्वारा रचनाओं को समृद्ध करने की नई परिपाटी प्रारंभ की। आमतौर पर मनुष्य अपने भौगोलिक ऐतिहासिक राजनीतिक सांस्कृतिक एवं रीति–रिवाजों से पहचाने जाते हैं किंतु ऐसी सामान्य सी दिखने वाली बातों को लेखक ने अपनी रचना में मानवीय संवेदना से युक्त करके सारे देश के समक्ष प्रस्तुत किया और इस तरह लोग अवगत होने में समक्ष हो पाए अपने से कहीं दूर के लोगों के मानवीय संवेदनाओ से। शायद भारत, एशिया, यूरोप आदि जैसा कोई देश का कोना होगा जहां राहुल जी के स्याही के रंग नहीं फैले होंगे। इसका उदाहरण 'वोल्गा से गंगा' में देखी जा सकती है। जो रूस की नदी वोल्गा से शुरू होकर पंजाब को पार करते हुए गंगा पर जाकर समाप्त होती है। इतने सारे मानवीय संवेदना को जोड़ना पाठकों के समक्ष लाना आसान काम नहीं है। वे साम्यवाद और बौद्ध धर्म से काफी प्रभावित थे। अपनी यात्राओं में राहुल जी ने अनेक कष्टों का सामना किया किंतु उसके बावजूद भी वे अतीत को वर्तमान तक खींच कर ले ही आते थे।

भाषा–शैली–द्विवेदी कालीन युग हिंदी को संपर्क भाषा साहित्य भाषा राष्ट्रभाषा बनाने की पुरजोर कोशिश की जा रही थी। राहुल जी ने भी इसमें काफी योगदान दिया। कई भाषाओं के ज्ञाता होने के बाद भी उन्होंने हिंदी को ही अपनी रचनाओं के लिए चुना। उनकी रचनाओं में तत्सम, अंग्रेजी उर्दू एवं आंचलिक शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है। कुल मिला जुला कर इनकी भाषा शैली सरल सपाट थी जो पाठकों तक आसानी से अपनी पहुंच बना लेती थी।

© JCERT not to be republished

राहुल सांकृत्यायन की प्रमुख रचनाएं:

१) कहानियां:

सतमी के बच्चे, वोल्गा से गंगा, बहुरंगी मधुपुरी, कनैला की कथा।

२) उपन्यास:

बाईसवी सदी, जीने के लिए, सिंह सेनापति, भागो नहीं दुनिया को बदलो, मधु स्वप्ना

३) यात्रा वृतांत:

मेरी जीवन यात्रा, मेरी लद्दाख यात्रा, किन्नर प्रदेश में, रूस में 25 मास।

४ जीवनी –

सरदार पृथ्वी सिंह, नए भारत के नए नेता, बचपन की स्मृतियां, अतीत से वर्तमान घुमक्कड़ स्वामी, असहयोग के मेरे साथी।

५) यात्रा साहित्य:

किन्नर देश की ओर, चीन में क्या देखा, मेरी लद्दाख यात्रा, मेरी तिब्बत यात्रा, ल्हासा की ओर।

[राहुल जी की रचना याद करने के ट्रिक– सतमी के बच्चे बीसवीं, सदी में ल्हासा की ओर]

पुरस्कार एवं सम्मान–१) भारतीय डाक तार विभाग की ओर से 1993 में उनकी जन्मशती के अवसर पर 100 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया।

२) 1958 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित। (मध्य एशिया का इतिहास)

३) 1963 में भारत सरकार के द्वारा दी जाने वालीतीसरी सबसे बड़ी पुरस्कार पदमभूषण पुरस्कार से सम्मानित।

ल्हासा की ओर पाठ का संक्षिप्त परिचय– 'ल्हासा की ओर 'राहुल सांकृत्यायन जी द्वारा रचित एक यात्रा वृतांत है। उन्होंने तिब्बत की यात्रा 1929 और 30 के बीच में की थी। पाठ में दो प्रमुख पात्र हैं एक लेखक और एक बौद्ध भिक्षु सुमति इनके द्वारा ही पूरी यात्रा वृतांत को हम आगे बढ़ते हुए देखेंगे। आइए पाठ के कुछ प्रमुख बिंदुओं का अवलोकन करें–

तिब्बत यात्रा के उद्देश्य–लेखक तिब्बत की यात्रा इसलिए करना चाहते थे ताकि वे बौद्ध धर्म से संबंधित कुछ जानकारी हासिल कर सके। उनकी रूचि सदैव ही अतीत को वर्तमान में खींच कर लाने की रही है। अंग्रेजों के समय में तिब्बत की यात्रा निषेध थी ऐसी स्थिति में उन्होंने भिखमंगे के छद्म–

रूप में तिब्बत की यात्रा की ताकि वे अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकें।

भीखमंगे के छद्म भेष में यात्रा–लेखक राहुल सांस्कृत्यायन तिब्बत की यात्रा एक भीखमंगे के छद्म रूप में करते हैं, क्योंकि अंग्रेज के समय में तिब्बत की यात्रा निषेध थी।

ल्हासा का महत्व–अंग्रेजों के समय में तिब्बत की यात्रा निषेध था। ऐसी स्थिति में नेपाल और भारतीय लोगों के लिए तिब्बत जाने का एकमात्र रास्ता जो था वह ल्हासा ही था। ल्हासा व्यापारिक और और सामरिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण मार्ग था।

© JCERT not to be republished

मार्ग में लेखक ने पाया ऐसे कई दुर्ग थे जो परित्यक्त (छोड़ा हुआ) थे जहां पर किसानों ने अपना बसेरा बना लिया था

तिब्बत मुश्किल भरा पड़ाव-तिब्बत में एक साथ कई तरह के मुश्किलों का सामना लेखक को करना पड़ा। सबसे पहले विषम जलवायु की तो दूसरी पाहड़ी देश होने के नाते यातायात की भारी कमी, कानूनी व्यवस्था ढीली होने के कारण लूटपाट हत्या जैसे आशंकाओं के बीच राहुल जी को यात्रा करना चुनौतियों से कम नहीं लग रहा था, फिर भी अपनी यात्रा उन्होंने जारी रखें ताकि वे अपने गंतव्य तक पहुंच सके।

अतिथि सत्कार से अभिभूत लेखक-लेखक अपनी तिब्बत यात्रा में पाते हैं कि यहां के लोग आतिथ्य सत्कार करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते। यहां पर अपरिचित लोगों को भी घर में प्रवेश करने की अनुमति थी जैसा लेखक के साथ भी होता है। सहायता की भावना लोग रखा करते थे।

परदा प्रथा से कोसों दूर तिब्बत-राहुल सांकृत्यायन ने यह पाया कि तिब्बत देश कुरीतियों और पर्दा प्रथा जैसी रीतियों से अछूता है। यहां की महिलाएं बाहरी लोगों से निर्भीक व्यवहार रखती थी एवं औरतें अपरिचितों से परदा नहीं किया करती थी और सहायता की भावना रखती थी।

जांती-पांती जैसे बंधनों से मुक्त तिब्बती समाज-तिब्बत जैसे पहाड़ी और छोटे से देश में लेखक ने जांती-पांती जैसे बंधनों से रहित समाज को पाया और लोग खुले विचार को मानते हुए पाए गए। जैसे आवश्यकतानुसार कोई भी व्यक्ति को घर में प्रवेश करने की अनुमति थी। तिब्बती समाज की उन्होंने खुलकर प्रशंसा की है।

प्रतिकूल जलवायु-तिब्बत अपने भौगोलिक विशेषताओं और प्रतिकूल जलवायु के अंतर्गत आने वाला छोटा सा देश है। यहां हरियाली की कमी तो है ही साथ में एक ही समय जलवायु में काफी अंतर देखने को मिलता है।लेखक कहते हैं कि यात्रा के दौरान उन्होंने देखा कि आगे की तरफ से जहां तेज धूप लग रही है तो वहीं दूसरी तरफ कंधे बर्फ के समान ठंड का अनुभव कर रहा था।

दुर्गम रास्ते-राहुल सांकृत्यायन ल्हासा की ओर जाते समय ऐसे अनेक दुर्गम पहाड़ियों का वर्णन करते हैं जिनके ढाले काफी खड़ी थी और ऊंचाई से गिरने का डर भी बना रहता था। इन रास्तों पर भारी सामान के साथ यात्रा करना बहुत ही कष्टप्रद था।

५- ढीली कानून व्यवस्था-राहुल सांकृत्यायन के हिसाब से उस समय तिब्बत में कानून की स्थिति बहुत बेहतर नहीं थी। पहाड़ों में लूटपाट और हत्या की घटनाएं आम बात थी। डाकुओं की लूटपाट की आशंका सदैव बनी रहती थी।

बौद्ध भिक्षु के प्रति सम्मान की भावना- समाज में बौद्ध भिक्षुओं को बहुत ही सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। लेखक जब मंगोल भिक्षु सुमति के बिना दूसरी बार तिब्बत यात्रा पर जाते हैं तो उन्हें रहने के लिए स्थान नहीं मिलता है। पहली बार सुमति के कारण ही उन्हें रहने के लिए स्थान मिलता है।

© JCERT not to be republished

लेखक का यात्रा के दौरान भटक जाना- तिब्बत की यात्रा के दौरान राहुल सांकृत्यायन को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अनजान व्यक्ति होने के कारण उन्हें मार्ग ज्ञात नहीं था। ऐसी दशा में जब उनका उनका घोड़ा सुस्त होकर पीछे रह जाता है तो वे सही रास्ता का चयन नहीं कर पाते और लड्कोर जाने के स्थान पर गलत दिशा की ओर मुड़ जाते हैं।

तिब्बती समाज की मान्यता-तिब्बती समाज की कुछ अपनी धारणाएं थी। जैसे तिब्बती समाज के मान्यतानुसार बोधगया से लाए गए गंडा समाप्त नहीं होने चाहिए। यह गंडा मंत्र पढ़कर लगाया हुआ धागा या कपड़ा होता था। यहां पर सबसे ऊंचे स्थान पत्थरों के ढेर जानवरों के सिंह और रंग-बिरंगे कपड़े की झंडियों से सजा डाडे (ऊंची भूमि) के देवता का स्थान था जिसे स्थानीय लोग बहुत ही सम्मान और पवित्रता कीदृष्टि से देखते थे।

मठों (विहार) का देश तिब्बत यहां के एक मठ में बौद्ध वाचन अनुवाद की हस्तलिखित 103 पोथियां राहुल जी के हाथों में लग जाती है जिसका वे विस्तृत अध्ययन करना चाहते हैं।

जागीरदारी प्रथा का रिवाज-यात्रा वृत्तांत से ज्ञात होता है कि यहां मठों के अधिकार क्षेत्र में बहुत सारे जमीने हुआ करती थी। जहां जमीदारी प्रथा के अंतर्गत भूमि का उपयोग किया जाता था। मठों को यह अधिकार प्राप्त था कि वह जागीरदारी प्रथा के तहत कृषि कार्य करवाएं।

© JCERT not to be republished

‘ल्हासा की ओर’ पाठ का सांराश –

ल्हासा की ओर’ सांराश–

- ‘ल्हासा की ओर’ पाठ एक यात्रा वृतांत है।
- अंग्रेजों के समय में तिब्बत की यात्रा करने पर रोक थी।
- लहासा एक वह मात्र रास्ता थी जिससे भारतीय तिब्बत देश में जाया करते थे।
- लेखक ने एक भीखमांगे की वेश में तिब्बत की यात्रा की थी।
- तिब्बती यात्रा के दौरान लेखक ने तिब्बत समाज की निम्न विशेषताओं को पाया –

  क) प्रतिकूल जलवायु

  ख) दुर्गम रास्ते

  ग) जांती–पांती पर्दा प्रथा से मुक्त जैसे बंधनों से मुक्त समाज

  घ) बौद्ध धर्म की विशेष मान्यता

  ड़) बौद्ध भिक्षु के प्रति विशेष सम्मान

  च) अतिथि का विशेष सत्कार

  छ) ढीली कानून व्यवस्था

  ज) जागीरदारी प्रथा का रिवाज

© JCERT not to be republished

लहासा तिब्बत देश की राजधानी है।

पाठ से जुड़ी कुछ रोचक जानकारी- लहासा तिब्बत देश की राजधानी है।

यह व्यापारिक और सैनिक रास्ता था।

देश आजदी के पहले नेपाल और हिंदुस्थान के चीज़ें ल्हासा के ही रास्ते तिब्बत जाया करती थीं।

इन्हें भी जानें- मील-दूरी की इकाई है एक मील में १ ६०९ किलो मीटर होता है।

फीट- ऊंचाई की इकाई है।

शिखर-पवतों की उच्चतम स्थान को शिखर कहते है।

मठ-मुख्य रूप से संन्यासियों या भिक्षुओं के रखरखाव, निवास और धार्मिक ज्ञान के प्रसार के लिए होता है।

विहार- बौद्ध मठो को विहार कहा जाता है।

टापू- वह भूखण्ड जो चारों ओर से जल से घिरा हो।

बोध गया- बोध गया बिहार राज्य में स्थित बौद्ध धर्म के लिए धार्मिक स्थल है, जहां गौतम बुद्ध ने ज्ञान की प्राप्ति की थी।

पलटन- सैन्य दल।

यजमान- धार्मिक कार्य करने वाला व्यक्ति।

वर्तनी संबन्धित कुछ रोचक अभ्यास।

इ की मात्रा- हिंदुसतान, तिब्बत, सैनिक, किसान, भिखमंगे।

ई की मात्रा- चीनी, पीकर, फौजी, भीतर, भीख, गरीब, पीठ।

उ की मात्रा- मुंह, सासु, भिक्षु, सुमित।

ऊ की मात्रा- बहू, चूल्हा, कूटना, पूछना, कसूर, खून, दूध, दूंगा, धूप, मालूम, डाकू।

वर्तनी संबंधी कुछ रोचक अभ्यास -

ि (इ) - हिंदुस्तान, किसान।

ी (ई) - चीनी, पीकर।

ु (उ) - मुख, सासु।

ू (ऊ) - बहू, चूल्हा।

बहुविकल्पी प्रश्न उत्तर

१. राहुल सांकृत्यायन का मूल नाम क्या है?

क) राघव पांडे ख) महेश पांडे

ग) दिनेश पांडे घ) केदार पांडे

उत्तर-घ) केदार पांडे।

टिप्पणी- बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पहले राहुल जी का मूल नाम केदार पांडे था।

२. महा पंडित के नाम से किन्हे जाना जाता है?

क) आचार्य रामचंद्र शुक्ल

© JCERT not to be republished

ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

ग) भारतेंदु हरिश्चंद्र

घ) राहुल सांकृत्यायन

उत्तर-घ) राहुल सांकृत्यायन।

टिप्पणी- पालि,प्राकृत अपभ्रंश तिब्बती आदि भाषाओं पर अधिकार होने के कारण उन्हें महा पंडित कहा गया है।

३. 'लहासा की ओर' किसकी रचना है?

क) राहुल सांकृत्यायन

ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

ग) भारतेंदु हरिश्चंद्र

घ) अचार्य रामचंद्र शुक्ला

उत्तर-क) राहुल सांकृत्यायन

४. 'ल्हासा की ओर' रचना किस विधा की रचना है?

क) निबंध ख) नाटक

ग) कविता घ) यात्रा वृतांत

उत्तर-घ) यात्रा वृतांत

५. घुमक्कड़ शब्द का क्या अर्थ है?

क) रोने वाला ख) हंसने वाला

ग) घूमने वाला घ) गाने वाला

उत्तर-ग) घूमने वाला।

६. सुमति कौन था?

क) एक यूरोपियन यात्री

ख) एक मंगोल भिक्षु

ग) एक श्रीलंकन भिक्षु

घ) एक अफ्रीकन यात्री

उत्तर-ख) एक मंगोल भिक्षु

टिप्पणी- मंगोल मध्य एशिया और पूर्वी एशिया में रहने वाली एक जाति है जहां पर अधिकाश लोग बौद्ध धर्म से जुड़े हुए है।

७. ल्हासा किस देश की राजधानी है?

क) श्रीलंका ख) भूटान

ग) थाईलैंड घ) तिब्बत

उत्तर-घ) तिब्बत

८. ल्हासा की ओर जाने वाले रास्ते कैसे थे?

क) आसान ख) दुर्गम (कठिन)

ग) सुखद घ) मनोरम

उत्तर-ख) दुर्गम (कठिन)

९. तिब्बती समाज के लोग किन्हें चोरी के डर से घर के अंदर आने नहीं देते थे?

क) अमीर लोगों को

ख) गरीब लोगों को

ग) बाहरी लोगों को

घ) निम्न श्रेणी के भिखमंगों को

उत्तर-घ) निम्न श्रेणी के भिखमंगो को

१०. तिब्बती समाज के लोग अपरिचित लोगों से कैसा व्यवहार रखते थे?

क) वैर का भाव ख) गुस्से का भाव

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

ग) प्रेम का भाव घ) नफरत का भाव

उत्तर-ग) प्रेम का भाव।

११ लेखक किस वर्ष तिब्बत की यात्रा पर गए थे?

क) 1940

ख) 1950

ग) 1945

घ) 1929-30 के बीच में।

उत्तर-घ) 1929-30 के बीच में।

१२. लेखक कितने वर्षों के बाद तिब्बत दोबारा आए थे ?

क) 7 वर्ष के बाद

ख) 3 वर्ष के बाद

ग) 5 वर्ष के बाद

घ) 4वर्ष के बाद

उत्तर-ग) 5 वर्षों के बाद।

१३. क्या पहली यात्रा में लेखक को रहने के लिए जगह मिली थी?

क) नहीं ख) पता नहीं

ग) शायद नहीं घ) हां

उत्तर-घ) हां

१४. दूसरी यात्रा पर क्या उन्हें रहने का स्थान मिला था?

क) नहीं ख पता नहीं

ग) शायद नहीं घ) हां

उत्तर-क) नहीं

टिप्पणी- पहली यात्रा पर लेखक को रहने का स्थान मिल गया था क्योंकि लेखक के साथ में सुमति थे, जिन्हें वहां के लोग काफी सम्मान देते थे, लेकिन दूसरी यात्रा पर लेखक अकेले गए थे।

१५. दूसरी यात्रा पर लेखक किस वेश में तिब्बत गए थे?

क) भिखमंगे के भेष में

ख) बहुरूपिऐ के भेष में

ग) भद्र वेश में

घ) साधु के वेश में

उत्तर-ग) भद्र (अच्छा) वेश में

१५. तिब्बती समाज में डांड़ा शब्द का क्या अर्थ है?

क) नीची जमीन

ख) समतल जमीन

ग) पहाड़ी जमीन

घ) ऊंची जमीन

उत्तर-घ) ऊंची जमीन।

१६. तिब्बत में सबसे खतरे की जगह किसे माना गया है?

क) नीची जमीन को

ख) समतल जमीनको

© JCERT not to be republished

ग) पहाड़ी जमीनको

घ) डांड़े (ऊंची जमीन) को

उत्तर-घ) डांड़े (ऊंची जमीन) को

१७. लेखक के तिब्बत यात्रा के समय में क्या तिब्बत में हथियार का कानून था?

क) नहीं ख) पता नहीं

ग) शायद हां घ) हां

उत्तर-क) हीं।

१८. हथियार का कानून नहीं होने के कारण लोग लाठी की तरह क्या लिए घूमते थे?

क) तलवार ख) भाला

ग) बम घ) पिस्तौल, बंदूक

उत्तर-घ) पिस्तौल, बंदूक

१९. खतरे का आभास होने पर लेखक क्या करते थे?

क) डर जाते थे।

ख) भीख मांगने लगते थे।

ग) गाने लगते थे।

घ) रोने लगते थे।

उत्तर-ख) भीख मांगने लगते थे।

२०. तिबबती समाज में सर्वोच्च स्थान पर किस देवता को सजाया जाता है?

क) घर के देवता को

ख) मंदिर के देवता को

ग) डांड़े के देवता को

घ) गांव के देवता को

उत्तर-घ) डांड़े के देवता को।

२१. दोनक्विक्सतो कौन था?

क) घोड़े का नाम

ख) स्पेनिश उपन्यास का पात्र

ग) एक देश का नाम

घ) पहाड़ का नाम

उत्तर-ख) स्पेनिश उपन्यास का पात्र

टिप्पणी- एक स्पेनिश उपन्यास का पात्र जो घोड़े पर सवारी करता था।

२२. सुमति को गुस्सा क्यों आया?

क) खाना ना मिलने के कारण

ख) पुस्तक न मिलने के कारण

ग) लेखक के देर से पहुंचने के कारण

घ) यजमान के ना मिलने के कारण

उत्तर-ग) लेखक के देर से पहुंचने के कारण

टिप्पणी- लेखक का लड़कोर(जगह का नाम) देर से पहुंचने के कारण। लड़कोर की यात्रा पर लेखक और सुमति दोनों साथ निकले थे, पर लेखक का घोड़ा सुस्त पड़ जाने के कारण लेखक को पहुंचने में देरी हो गई।

२३. कंडे शब्द का अर्थ बताएं?

क) खेत ख) जमीन

ग) घर घ) उपला

उत्तर- उपला।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

२४. थुकपा क्या है?

क) एक प्रकार का अनाज

ख) एक प्रकार का वस्त्र

ग) एक प्रकार का खाद्य पदार्थ

घ) एक प्रकार का पेय पदार्थ

उत्तर-ग) एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

२५. तिब्बती समाज में गंडा का क्या अर्थ है?

क) धार्मिक पुस्तक

ख) अनाज

ग) मंत्र पढ़कर गांठ लगाया गया धागा।

घ) भिक्षा

उत्तर-ग) मंत्र पढ़कर गांठ लगाया गया धागा।

२६. सुमति से यजमान क्या प्राप्त करते थे?

क) धार्मिक पुस्तक

ख) अनाज

ग) भिक्षा

घ) गंडा (धागा, कपड़ा)

उत्तर-घ) गंडा (धागा, कपड़ा)।

२७. सुमति अपने यजमानों से मिलने ना जा सके इसके लिए उन्होंने उसे क्या लोभ दिया?

क) भोजन खिलाने की बात की

ख) रुपए देने की बात कही।

ग) जूते देने की बात कही।

घ) कपड़े देने की बात की।

उत्तर-ख) रुपए देने की बात कही।

टिप्पणी- लेखक ने ल्हासा पहुंचने पर सुमति को रुपए देने की बात कही।

२८. तिब्बत की अधिकांश जमीन किस प्रकार से बँटी हुई थी?

क) बड़े हिस्सों में

ख) छोटे हिस्सों में

ग) खेत के रूप में

घ) छोटे -बड़े जागीरदारों में।

उत्तर-घ) छोटे-बड़े जागीरदारों में।

२९. जगीरो का अधिकांश हिस्सा किसके हाथों में था?

क) सरकार के पास में

ख) गांव के पास में

ग) मठों के हाथ में

घ) सरदार के पास में

उत्तर-ग) मठों के हाथ में।

३०. तिब्बत में मुखिया भिक्षु को क्या कहा जाता है?

क) पंडित ख) मुखिया

ग) प्रमुख घ) नम्से

उत्तर-घ) नम्से

© JCERT not to be republished

पाठ से संबंधित अति लघुत्तरीय प्रश्न

१) लेखक सुमति से रास्ते में कैसे पिछड़ गया?

उत्तर- घोड़े के सुस्त हो जाने के कारण लेखक रास्ते में सुमति से पीछे रह जाते हैं।

२) दोनक्विक्सतो कौन था?

उत्तर- स्पेनिश उपन्यास का एक पात्र।

३) सुमति को गुस्सा क्यों आया?

उत्तर- लेखक के देर से पहुंचने के कारण

४) कंडे शब्द का अर्थ बताएं?

उत्तर- गाय, भैंस के गोबर से बने उपले।

५) लेखक की तिब्बत यात्रा के दौरान तिब्बत की कानून व्यवस्था कैसी थी?

उत्तर- सरकार कानून व्यवस्था पर अधिक पैसे खर्च नहीं करती थी और हथियार का कानून ना रहने के कारण यहां पर लोग लाठी की तरह पिस्तौल बंदूक लिए फिरते थे।

६) लेखक को पहली यात्रा के दौरान रहने के लिए स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा ऐसा नहीं हुआ क्यों?

उत्तर- पहली यात्रा पर लेखक को रहने का स्थान मिल गया था क्योंकि लेखक के साथ में सुमति थे, जिन्हें वहां के लोग काफी सम्मान देते थे लेकिन दूसरी यात्रा पर लेखक अकेले गए थे इसलिए उन्हें रहने के लिए स्थान नहीं मिला।

७) तिब्बत में लोगों की धार्मिक मान्यताएं कैसी थी?

उत्तर- तिब्बत में बोधगया से लाए गए कपड़े का काफी महत्व था यह कपड़े कभी खत्म नहीं होने चाहिए थे, खत्म होने की स्थिति में किसी कपड़े से बोध गया का गंडा बना लेते थे।

८) तिब्बत में गंडा का क्या अर्थ है?

उत्तर- मंत्र पढ़कर गांठ लगाया हुआ धागा या कपड़ा को तिब्बती समाज में गंडा कहा जाता है।

९) लेखक यात्रा के दौरान तिब्बत की कैसी जलवायु का सामना करते हैं?

उत्तर- तिब्बत की जलवायु विषम है। यात्रा के दौरान लेखक ने पाया कि आगे की तरफ से जहां तेज धूप लग रही है तो वहीं दूसरी तरफ कंधे बर्फ के समान ठंड का अनुभव कर रहा था।

१०) लेखक सुमति को रुपए देने का प्रलोभन क्यों देते हैं?

उत्तर- लेखक जल्दी से जल्दी लहासा पहुंचना चाहते थे इसलिए वे सुमति को रुपए देने का प्रलोभन देते हैं।

११) सुमति आस-पास के गांव में यजमानों को क्या दिया करते थे?

उत्तर- मंत्र पढ़कर गांठ लगाया हुआ धागा या कपड़ा जिसे तिब्बती समाज में गंडा कहा

© JCERT not to be republished

जाता है सुमति अपने यजमानों को दिया करते थे।

१२) तिब्बत की अधिकांश जमीन किस प्रकार से बँटी हुई थी?

उत्तर- तिब्बत की अधिकांश जमीन बहुत अधिक छोटे-बड़े जागीरदारों में बँटी हुई थी।

१३) जागीरों का बहुत ज्यादा हिस्सा किन के हाथों में था?

उत्तर- जागीरो का बहुत ज्यादा हिस्सा मठों के हाथ में था।

१४) जागीरो की देखभाल करने के लिए मठों से किन को भेजा जाता था?

उत्तर- जागीरो की देखभाल करने के लिए मठों से बौद्ध भिक्षुओं को भेजा जाता था।

१५) खेती का इंतजाम देखने के लिए भेजे गए भिक्षुओं को तिब्बती समाज में कैसी स्थिति थी?

उत्तर- जागीर के आदमियों के लिए यह भिक्षु राजाओं से कम नहीं होते थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

१ राहुल सांकृत्यायन का मूल नाम क्या है?

उत्तर-केदार पांडे।

व्याख्या-बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पहले राहुल जी का मूल नाम केदार पांडे था।

२ महा पंडित के नाम से किन्हे जाना जाता है?

उत्तर-राहुल सांकृत्यायन को।

व्याख्या - पालि,प्राकृत अपभ्रंश तिब्बती आदि भाषाओं पर अधिकार होने के कारण उन्हें महा पंडित कहा गया है।

३- ल्हासा की ओर किसकी रचना है?

उत्तर -राहुल सांकृत्यायन

४- ल्हासा की ओर रचना किस विधा की रचना है?

उत्तर यात्रा वृतांत।

५- घुमक्कड़ शब्द का क्या अर्थ है

उत्तर घूमने वाला।

६- सुमति कौन था?

उत्तर एक मंगोल भिक्षु।

व्याख्या -मंगोल मध्य एशिया और पूर्वी एशिया में रहने वाली एक जाति है जहां पर अधिकाश लोग बौद्ध धर्म से जुड़े हुए है।

७ ल्हासा किस देश की राजधानी है?

उत्तर - तिब्बत ।

८- ल्हासा की ओर जाने वाले रास्ते कैसे थे?

उत्तर - दुर्गम (कठिन)।

९- तिब्बती समाज के लोग किन्हें चोरी के डर से घर के अंदर आने नहीं देते थे?

उत्तर - निम्न श्रेणी के भिखमंगो को।

© JCERT not to be republished

१०) तिब्बती समाज के लोग अपरिचित लोगों से कैसा व्यवहार रखते थे

उत्तर-प्रेमभाव का।

११) लेखक किस वर्ष तिब्बत की यात्रा पर गए थे?

उत्तर -1929-30 के बीच में।

१२- लेखक कितने वर्षों के बाद तिब्बत दोबारा आए थे ?

उत्तर -5 वर्षों के बाद।

१३- क्या पहली यात्रा में लेखक को रहने के लिए जगह मिली थी?

उत्तर हां।

१४- दूसरी यात्रा पर क्या उन्हें रहने का स्थान मिला था?

उत्तर -नहीं।

व्याख्या - पहलीयात्रा पर लेखक को रहने का स्थान मिल गया था क्योंकि लेखक के साथ में सुमति थे, जिन्हें वहां के लोग काफी सम्मान देते थे लेकिन दूसरी यात्रा पर लेखक अकेले गए थे।

१५- दूसरी यात्रा पर लेखक किस वेश में तिब्बत गए थे?

उत्तर -भद्र(अच्छा) वेश में गए थे।

१६- तिब्बती समाज में डांड़ा शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर - ऊंची जमीन।

१७- तिब्बत में सबसे खतरे की जगह किसे माना गया है?

उत्तर -डांड़े (ऊंची जमीन) को।

१८- लेखक के तिब्बत यात्रा के समय में क्या तिब्बत में हथियार का कानून था?

उत्तर -नहीं।

१९- हथियार का कानून नहीं होने के कारण लोग लाठी की तरह क्या लिए घूमते थे?

उत्तर -पिस्तौल, बंदूक।

२०- खतरे का आभास होने पर लेखक क्या करते थे?

उत्तर -भीख मांगने लगते थे।

२१- तिब्बती समाज में सर्वोच्च स्थान पर किस देवता को सजाया जाता है

उत्तर-डांड़े के देवता को।

२२- दोनक्विक्सतो कौन था?

उत्तर -एक स्पेनिश उपन्यास का पात्र जो घोड़े पर चलता था।

२३- सुमति को गुस्सा क्यों आया?

उत्तर लेखक का लड़कोर (जगह का नाम) देर से पहुंचने के कारण।

व्याख्या - लड़कोर की यात्रा पर लेखक और सुमति दोनों साथ निकले थे, पर लेखक का घोड़ा सुस्त पड़ जाने के कारण लेखक को पहुंचने में देरी हो गई।

© JCERT not to be republished

२४- कंडे शब्द का अर्थ बताएं।

उत्तर -उपला।

२५- थुकपा क्या है?

उत्तर - एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

२६- तिब्बती समाज में गंडा का क्या अर्थ है?

उत्तर -मंत्र पढ़कर गांठ लगाया गया धागा।

२७- सुमति से यजमान क्या प्राप्त करते थे?

उत्तर गंडा (धागा ,कपड़ा)।

२८- सुमति अपने यजमानों से मिलने ना जा सके इसके लिए इसके लिए उन्होंने उसे क्या लोभ दिया?

उत्तर -लेखक ने ल्हासा पहुंचने पर सुमति को रुपए देने की बात कही।

२९- तिब्बत की अधिकांश जमीन किस प्रकार से बटी हुई थी?

उत्तर -छोटे -बड़े जागीरदारों में।

३०- जगीरो का अधिकांश हिस्सा किसके हाथों में था?

उत्तर -मठों के हाथ में।

३१- तिब्बत में मुखिया भिक्षु को क्या कहा जाता है

उत्तर -नम्से ।

© JCERT not to be republished

लघु उत्तरीय प्रश्न-

१ यात्रा वृतांत के क्या उद्देश्य या लाभ हो सकते हैं?

उत्तर- यात्रा वृतांत के द्वारा विभिन्न स्थानों के भौगोलिक वर्णन के साथ साथ वहां के लोगों के जीवन के बारे में जाना जा सकता है।

२- आंनचलिक शब्द का अर्थ बताएं?

उत्तर- अंचल या स्थान विशेष की भाषा को आंचलिक कहते है जैसे तिब्बती समाज में दया को कुची-कुची कहते है।

३- लेखक के दृष्टिकोण (नजर) में तिब्बत की यात्रा करना थोड़ा सहज था कैसे?

उत्तर- तिब्बती समाज में जांति- पांति, छुआछूत की भावना नहीं थी एवं औरतें अपरिचितों से परदा नहीं किया करती थी, सहायता की भावना लोग रखते थे।

४- तिब्बती समाज में सर्वोच्च स्थान पर डांड़े के देवता को किस प्रकार से सजाया जाता था?

उत्तर- पत्थरों के ढेर, जानवरों की सींगों और रंग-बिरंगे कपड़े की झंडियो से डांड़े देवता को सजाया जाता था।

प्रश्न - अभ्यास

१- थोङ्ला के पहले के आखिरी गाँव पहुँचने पर भिखमंगे के वेश में होने के बावजूद लेखक को ठहरने के लिए उचित स्थान मिला जबकि दूसरी यात्रा के समय भद्र वेश भी उन्हें उचित स्थान नहीं दिला सका। क्यों?

उत्तर- इसका प्रमुख कारण यह था कि पहली यात्रा में लेखक के साथ में मंगोल भिक्षु सुमति थे, जिन्हें लोग काफी सम्मान की दृष्टि से देखते थे दूसरी यात्रा में लेखक अकेले थे और अविश्वास के कारण लोगों ने उन्हें रहने के लिए स्थान नहीं दिया।

२- उस समय के तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण यात्रियों को किस प्रकार का भय बना रहता था?

उत्तर- तिब्बत में हथियार का कानून न रहने के कारण उस समय यात्रियों को डाकुओं से मारे जाने का भय बना रहता था।

३- लेखक लङ्कोर के मार्ग में अपने साथियों से किस कारण पिछड़ गया?

उत्तर- इसके दो प्रमुख कारण थे-

१- घोड़े का सुस्त पड़ जाना।

२) लेखक का रास्ता भटक जाना।

४- लेखक ने शेकर विहार में सुमति को उनके यजमानों के पास जाने से रोका, परंतु दूसरी बार रोकने का प्रयास क्यों नहीं किया?

उत्तर- क्योंकि लेखक को वहां बुद्ध-वचन-अनुवाद की हस्तलिखित 103 पोथिया मिल गई थी, जिनका वह अध्ययन करना चाहते थे।

५- अपनी यात्रा के दौरान लेखक को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

उत्तर- यात्रा के दौरान लेखक को निम्नलिखित कठिनाइयों का सामना करना पड़ा-

(१) लेखक को भिखारी का भेष धारण करना पड़ा।

(२) दुर्गम रास्ते और प्रतिकूल जलवायु को झेलना पड़ा।

(३) पीठ पर सामना भी ढोना पड़ा।

६- प्रस्तुत यात्रा -वृतांत के आधार पर बताइए कि उस समय का तिब्बती समाज कैसा था?

उत्तर- लेखक ने अपने यात्रा-वृत्तांत में तिब्बती समाज को कुछ इस प्रकार से दिखाया है-

१- परदा प्रथा का ना होना।

२- जांति-पांति, छुआछूत जैसी कुप्रथा का नहीं होना।

३- आतिथ्य सेवा की भावना।

४- समाज में धार्मिक अन्धविश्वास का पाया जाना।

५- जागीरदारी प्रथा।

© JCERT not to be republished